क्या रमज़ान की सत्ताईसवीं रात लैलतुल-क़द्र है?

[**हिन्दी** – Hindi – هندي]

मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन

संपादनः **अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह**

2014 - 1435

IslamHouse.com

﴿ ليلة السابع والعشرين من رمضان هل هي ليلة القدر؟ ﴾

« باللغة الهندية »

محمد بن صالح العثمين

مراجعة: عطاء الرحمن ضياء الله

2014 - 1435

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे

गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

क्या रमज़ान की सत्ताईसवीं रात लैलतुल-क़द्र है?

प्रश्नः

कुछ लोग रमज़ान की सत्ताईसवीं रात को लैलतुल–क़द्र से चर्चित करते हैं . . . तो क्या इस निर्धारण (चयन) का कोई आधार है? और क्या इसका कोई प्रमाण है?

उत्तरः

जी हाँ, इसे निर्धारित करने का एक आधार है, और वह यह है कि सत्ताईसवीं रात में

लैलतुल–क़द्र होने की सबसे अधिक आशा है, जैसाकि यह सहीह मुस्लिम में उबै बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस (संख्या : 2778) में वर्णित है।

लेकिन विद्वानों के कथनों में से जिनकी संख्या चालीस से अधिक तक पहुँचती है, राजेह (सही) कथन यह है कि लैलतुल क़द्र अंतिम दस रातों में है, विशेषकर उसकी अंतिम सात रातों में। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान हैः ''उसे – अर्थात् लैलतुल–क़द्र को – अंतिम दस रातों में तलाश करो, अगर तुम में से कोई कमज़ोर पड़ जाए या बेबस हो जाए, तो अंतिम सात रातों में सुस्ती न करो।'' (मुस्लिम, हदीस संख्या : 276) अतः वह सत्ताईस की रात

हो सकती है, और वह पच्चीस की रात भी हो सकती है, और वह तेईस की रात भी हो सकती है, और वह उन्तीस की रात भी हो सकती है, और वह अठाईस की रात भी हो सकती है, और वह छब्बीस की रात भी हो सकती है, और वह चौबीस की रात भी हो सकती है।

इसीलिए मनुष्य को चाहिए कि सभी रातों में अल्लाह की इबादत करने में संघर्ष करे ताकि उसकी प्रतिष्ठा और पुण्य से वंचित न रहे; जबकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿إِنَّآ أَنزَلْنَـٰهُ فِى لَيْلَةٍ مباركة إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ﴾

[الدخان: ٣]

निःसंदेह हमने उसे एक बरकत भरी रात में अवतरित किया है। निश्चय ही हम सावधान करनेवाले हैं।" (सूरतुद-दुखान : ३)

तथा अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया :

﴿إِنَّا أَنزَلْنَـٰهُ فِى لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝١ وَمَآ أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝٣ تَنَزَّلُ الملائكة وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝٤ سلام هى حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥﴾ [سورة القدر].

"हमने इसे क़द्र की रात में अवतरित किया। और तुम्हें क्या मालूम कि क़द्र की रात क्या

है? क़द्र की रात उत्तम है हज़ार महीनों से, उसमें फ़रिश्तें और रूह हर महत्वपूर्ण मामलें में अपने रब की अनुमति से उतरते है। वह रात पूर्णतः शान्ति और सलामती है, फ़ज्र के उदय होने तक।" (सूरतुल क़द्र)

स्रोत: साइट अल-मुस्लिम